LUCKNOW, Thursday,
16 September 2021
LUCKNOW EDITION
Lucknow/Sitapur Distt.- ₹3.00/-
Other Distt.- ₹3/-
Pages 14

दैनिक जागरण

www.inextlive.com
Published from LUCKNOW ● Agra ● Bareilly ● Dehradun ● Gorakhpur ● Jamshedpur ● Kanpur ● Meerut ● Patna ● Prayagraj ● Ranchi ● Varanasi

i SHARE

फ्यूचर जेनरेशन के लिए बनाना होगा 'सेफ जोन'

इंटरनेशनल डे फॉर द प्रिवेंशन ऑफ ओजोन लेयर पर विशेष

अमृतेश श्रीवास्तव
(Writer is Associated with NPCIL, Department of Atomic Energy, Mumbai)

आज का दिन पर्यावरण को लेकर हमारी प्रतिबद्धता के नजरिए से हम सभी के लिए काफी अहम है. पूरी दुनिया 16 सितंबर को हर साल ओजोन लेयर के संरक्षण की जागरूकता के लिए अंतर्राष्ट्रीय ओजोन दिवस के रूप में मनाती है. ये वही ओजोन लेयर है, जो पृथ्वी की सतह पर सूर्य की हानिकारक अल्ट्रा वॉयलेट किरणों को पहुंचने से रोकती है और हमारे लिए एक रक्षा कवच बनकर हमें कैंसर और अन्य हानिकारक रोगों से भी काफी हद तक बचाती है, मगर पिछले कुछ सालों में मानव निर्मित गतिविधियों और पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण कार्यालयों और गाड़ियों में इस्तेमाल होने वाले एयर कंडीशनर्स और रेफ्रिजरेटर्स द्वारा निकलने वाली क्लोरोफ्लोरो कार्बन, हाइड्रोफ्लोरो कार्बन, हैलोन्स इत्यादि के उत्सर्जन से जिस तरह से इस लेयर को नुकसान पहुंचा है, इसका संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी बन जाती है.

16 सितंबर 1987 को मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत दुनिया के 197 देशों से आग्रह किया गया था कि ओजोन लेयर को नुकसान पहुंचाने वाले हानिकारक पदार्थों के उत्पादन को धीरे-धीरे खत्म किया जाए और इसी अंतर्राष्ट्रीय संधि के तहत पिछले कुछ समय में विश्वस्तर पर किए गए तकनीकी अनुसंधान और विशेष प्रयासों के चलते वर्ष 2050 से 2070 के बीच में धीरे-धीरे इस लेयर को फिर से 1980 के दौरान वाले अपने वास्तविक रूप में लाने के लिए हर संभव कोशिश की जा रही है, जो कि काफी हद तक हमें संतोष की अनुभूति देता है, मगर इससे भी ज्यादा जो एक चीज हम सबके लिए आज परेशानी का सबब बनकर सामने आ रही है, वो है जलवायु परिवर्तन और बढ़ता हुआ वैश्विक तापमान. मैं उसी रिपोर्ट का संज्ञान देना चाहूंगा, जिसमें आने वाले 20, 30 सालों में पृथ्वी के वैश्विक तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि होने का अनुमान लगाया गया है, जो निसंदेह सोचने पर मजबूर करता है कि आखिर हमें विकास की क्या कीमत चुकानी होगी. ये रिपोर्ट ये दिखाती है कि हम अपने पर्यावरण को बचाने के लिए कारगर और ठोस कदम उठाने में बिलकुल भी सफल नहीं हो पाए हैं और ये पूरी तरह से प्रकृति के नैसर्गिक रूप में बदलाव के लिए मानवीय हस्तक्षेप को परिलक्षित करती है. वर्ष 2015 में पेरिस में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय क्लाइमेट कॉन्फ्रेंस कॉप-21 (21वां कॉन्फ्रेंस ऑफ द पार्टीज) सम्मेलन में दुनिया के 196 देशों ने संकल्प लिया था कि पर्यावरण के वैश्विक तापमान वृद्धि को प्री इंडस्ट्रियल लेवल से ज्यादा न बढ़ाते हुए इस वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस या फिर उससे भी कम केवल 1.5 डिग्री सेल्सियस के आसपास रखा जाएगा और इसके लिए तमाम विकसित देशों को 21वीं सदी के मध्य तक कार्बन फुटप्रिंट में पूरी तरह से कटौती करने के लिए आग्रह किया गया था, लेकिन इस बात का जरा भी अनुमान नहीं था कि ये रिपोर्ट इतनी जल्दी ही सभी प्रयासों को धता बताते हुए आपको चौंकने पर मजबूर कर देगी.

आज वास्तव में धरती का बढ़ता हुआ तापमान सबके लिए चिंता का विषय है, क्योंकि बीते कुछ सालों में जिस तरीके से असहनीय गर्मी में बढ़ोतरी हुई है, उससे जंगलों में भीषण आग का लगना, हीट वेव्स का बढ़ना, ग्लेशियर्स का पिघलना, कहीं असमय और मूसलाधार बरसात और उसके बाद प्रलयकारी बाढ़ का प्रकोप, तो कहीं सूखे की भयावह स्थिति, जाड़ों के दिनों की संख्या में कमी एवं गर्मी के दिनों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी जैसी घटनाएं आम हो गई हैं. अगर आज देखा जाए तो दुनिया का कोई भी ऐसा देश बचा नहीं है, जो इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से अछूता रह गया हो. इस रिपोर्ट में भारत और अन्य साउथ एशियाई देशों के लिए भी जिस तरह से पर्यावरण असंतुलन की तस्वीर पेश की गई है वो वास्तव में हमारे लिए खतरे की घंटी है. इस रिपोर्ट के मुताबिक जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा प्रभाव उन शहरों पर पड़ेगा जो खासतौर पर समुद्र के किनारे बसे हैं. मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे भारतीय महानगरों के लिए भी एक बड़ी चुनौती आने वाली है जहां बताया गया है कि अगली एक सदी में समुद्र के जल स्तर में काफी बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है, जिससे कोस्टल लाइन पर गुजर बसर करने वाले लोगों के जीवनयापन पर निसंदेह प्रतिकल प्रभाव पड़ सकता है.

> Global warming is a scientific fact as much as the hole in the ozone layer or Earth's orbit around the sun.
>
> JOHAN ROCKSTROM

ग्लोबल टेम्प्रेचर बढ़ने और क्लाइमेट चेंज में कार्बन डाईऑक्साइड व अन्य ग्रीन हाउस गैस का सबसे बड़ा रोल है, इसलिए हमारी कोशिश इनके उत्सर्जन को रोकना है. उम्मीद है कि हम सस्टेनेबल डेवलपमेंट की राह पर आगे बढ़ते हुए नेचर के साथ बैलेंस बनाकर अपनी फ्यूचर जेनरेशन के उज्जवल भविष्य के लिए इस पर विचार करेंगे.

कुल मिलाकर वैश्विक तापमान बढ़ने व जलवायु परिवर्तन में कार्बन डाईऑक्साइड व अन्य ग्रीन हाउस गैसों की सबसे बड़ी भूमिका है. इसलिए हमारा सबसे ज्यादा प्रयास इनके उत्सर्जन को रोकना है. ताकि हम पर्यावरण को स्वच्छ व हरा-भरा बना सकें. उम्मीद है कि हम सस्टेनेबल डेवलपमेंट की दिशा में प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर अपने आगे आने वाली पीढ़ियों के उज्जवल भविष्य के लिए इस पर गंभीरता से विचार करेंगे और वक्त रहते सही कदम उठाएंगे.

इस पृष्ठ पर अपनी राय हमें इस ईमेल पर भेजें
editor@inext.co.in